राष्ट्रीय जलीय जन्तु गांगेय डॉल्फिन का संरक्षण

गांगेय डॉल्फिन को स्थानीय भाषा में 'सुंस' कहते हैं। इसका वैज्ञानिक नाम प्लाटानिस्टा गैंगेटिका है। यह जल में पाया जाने वाला एक स्तनधारी प्राणी है जो भारत, नेपाल एवं बांगलादेश के गंगा–ब्रह्मपुत्र–मेघना, एवं सांगु–कर्णफुली नदी तंत्र में पाया जाता है। यह भारतीय उपमहाद्वीप का एक चमत्कारिक वृहत प्राणी है। गांगेय डॉल्फिन के अलावा मीठे जल में दो और डॉल्फिन पाये जाते हैं – ये हैं – पाकिस्तान के सिन्धु नदी में पाया जाने वाला 'भुलन' जिसका वैज्ञानिक नाम 'प्लाटानिस्टा गैंगेटिका माइनर' तथा दूसरा दक्षिण अमेरिका के आमेजन एवं उसके सहायक नदियों में पाया जाने वाला 'बोटो' जिसका वैज्ञानिक नाम है 'इनिया जियोफ्रेंसीस' इनके अलावा एक चौथा डॉल्फिन भी चीन के यांग्त्जी नदी में पाया जाता था। इस डॉल्फिन को निश्चित रूप से अंतिम बार 2002 में देखा गया और बाद में इसे दिसम्बर, 2006 में विलुप्त घोषित कर दिया गया। मीठे जल में रहने वाले चीन के इस डॉल्फिन को स्थानीय भाषा में 'बाइजी' तथा वैज्ञानिक भाषा में 'लिपोट्स वेक्सिलीफर कहा जाता है।

वर्त्तमान में इस प्राणी को भारतीय वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 की अनुसूची–1 में तथा इंटरनेशनल यूनियन फॉर कंजर्वेशन ऑफ नेचर (आई.यू.सी.एन.) के रेड लिस्ट में संकटग्रस्त प्रजाति के रूप में वर्गीकृत किया गया है। इसके अलावा इस प्रजाति को कन्वेंशन ऑन इंटरनेशनल ट्रेड इन एंडेंजर्ड स्पीशीज (सी.आई.टी.ई.एस.) के परिशिष्ट–1 एवं कन्वेशन ऑन माइग्रेटरी स्पीशीज (सी.एम.एस.) के परिशिष्ट–11 में शामिल किया गया है।

गांगेय डॉल्फिन की संख्या में गिरावट के कई कारण हैं। इसके शरीर में इसके वजन का लगभग 25–30 प्रतिशत वसा होता है जिसके कारण इसको मार दिया जाता है। साथ ही इसके मांस के लिए भी जानबुझकर या अनजाने में शिकार होता रहा है। यदा कदा मोटरयुक्त नाव से टकराकर मरने की घटना भी देखी गयी है। इसके अलावा इसके वास स्थान का भी काफी विनाश हो रहा है। नदियों पर बनाये गये बाँध इसके आवागमन के रास्ते में एक बहुत बड़ा अवरोध है, फलस्वरूप इसकी आबादी छोटे–छोटे समुहों में बंट गयी है। छोटे समुह का आपस में प्रजनन लम्बी अवधि में डॉल्फिन के लिए खतरनाक साबित होता है। इसके अलावा शहरों एवं उद्योगों से निकलने वाला अवशिष्ट जल, कृषि एवं स्वास्थ्य क्षेत्रों में उपयोग किए जाने वाले कीटनाशक रसायन, खेतों में डाले जाने वाले रासायनिक खाद एवं अन्य स्त्रोतों से नदियों में आने वाले खतरनाक जहरीले रसायन, इसके वास स्थान तथा पूरे पारिस्थितिकी तंत्र को प्रदूषित कर रहा है।

वर्त्तमान में गांगेय डॉल्फिन का विस्तार क्षेत्र गंगा एवं ब्रह्मपुत्र तथा उनकी बड़ी सहायक नदियाँ जैसे यमुना, चंबल घाघरा, गंडक, कोशी, सुभांसिरी, दिबांग, लोहित इत्यादि में है। अधिकांश छोटी सहायक नदियों में डॉल्फिन अब केवल बरसात के महीनों में ही देखी जाती है वह भी काफी कम संख्या में। गंगा में भी मध्य गंगा, बैराज, बिजनौर के उपर लगभग 80–100 कि0मी0 में डॉल्फिन पिछली 15–16 वर्षों में नहीं देखी गयी है। नेपाल के कर्नाली नदी में लगभग 10 डॉल्फिन और नेपाल के कोशी नदी में 4–5 की संख्या बतायी जाती है। बंगलादेश में इसकी संख्या लगभग 500 है जिसमें आधी आबादी सुंदरबन क्षेत्र में है। भारत के सुंदरबन में अभी तक डॉल्फिन सर्वेक्षण का काम नहीं हो सका है। संपूर्ण विस्तार क्षेत्र में गांगेय डॉल्फिन की अनुमानित संख्या 2500–3000 है जिसकी लगभग 80 प्रतिशत आबादी भारतीय क्षेत्र में पायी जाती है।

भारत में पायी जाने वाली लगभग 2500 डॉल्फिन में से बिहार की नदियों में पायी जाने वाली गांगेय डॉल्फिन की संख्या 1300–1400 है। इस प्रकार इसके संरक्षण में बिहार की भूमिका महत्वपूर्ण है। National Ganga River Basin Authority (NGRBA) की प्रथम बैठक जो 05 अक्टूबर 2009 को माननीय प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में आहुत की गयी थी, में माननीय मुख्यमंत्री, बिहार श्री नीतीश कुमार ने गांगेय डॉल्फिन के संरक्षण पर ध्यान आकृष्ट किया तथा इसे राष्ट्रीय जलीय जन्तु घोषित करने का प्रस्ताव दिया, जिसे बैठक में सर्वसम्मति से स्वीकार कर लिया गया। पुनः माननीय प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में हुयी National Board for Wildlife (NBWL) की 5वीं बैठक (18 मार्च 2010) को इसे विधिवत् पारित किया गया तथा इस आशय की अधिसूचना F.No.-6-74/2009 WL दिनांक–10.05.2010 को जारी की गयी।

अतः **05 अक्टूबर** को प्रतिवर्ष गांगेय डॉल्फिन के संरक्षण के क्षेत्र में जागरूकता पैदा करने के उद्देश्य से '**डॉल्फिन डे**' मनाने का निर्णय लिया गया।

डॉल्फिन संरक्षण की योजनायें

1. बिहार वन एवं वन्यप्राणी संरक्षण कोष (दुर्गावती परियोजना) में उपलब्ध राशि से गंगा नदी में बक्सर के चौसा से कटिहार के मनिहारी तक तथा गंगा–गंडक नदी के संगम (सोनपुर) से अपस्ट्रीम में गांगेय डॉल्फिन के सर्वेक्षण की योजना 2012–2013 में स्वीकृत की गयी।

   इस योजना में वैज्ञानिक सर्वेक्षण के साथ डॉल्फिन के संबंध में स्थानीय मछुआरों तथा अन्य लोगों के साथ शिक्षा तथा प्रचार–प्रसार का कार्यक्रम भी सम्मिलित है। योजना की कुल राशि रू0 11.25 लाख है तथा यह कार्य डा0 आर0 के0 सिन्हा, प्रोफेसर जन्तु विज्ञान, पटना विश्वविद्यालय द्वारा किया जायेगा। यह कार्य छः माह में पूर्ण किया जायेगा।

2. बिक्रमशिला गांगेय डॉल्फिन आश्रयणी की प्रबंधन योजना (सुलतानगंज से कहलगाँव) Zoological Survey of India (ZSI) से तैयार कराने का निर्णय लिया गया है। प्रबंधन योजना तैयार करने हेतु कुल रू0 10.00 लाख की राशि स्वीकृत कर दी गयी है। यह कार्य छः माह में पूरा किया जायेगा।

3. वित्तीय वर्ष 2012–13 में राज्य योजना मद से बिक्रमशिला गांगेय डॉल्फिन आश्रयणी के रख–रखाव एवं डॉल्फिन की सुरक्षा हेतु कुल रू0 1.64 लाख की योजना स्वीकृत की गयी, जिसमें पेट्रोलिंग तथा स्थानीय मछुआरों के बीच प्रचार–प्रसार एवं जागरूकता लाने हेतु छः शिविर का आयोजन करना सम्मिलित है।

4. पटना में डॉल्फिन संरक्षण एवं शोध संस्थान के लिए प्रस्ताव प्रो0 आर0 के0 सिन्हा द्वारा तैयार किया गया है इसे योजना एवं विकास विभाग के माध्यम से योजना आयोग, भारत सरकार को प्रेषित किया जायेगा। NGRBA तथा योजना आयोग इसके लिए अनौपचारिक रूप से सहमत हैं।